"शीत युद्धोत्तर भारत–ईरान सम्बन्धः ऊर्जा सुरक्षा के विशेष संदर्भ में"

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
लखनऊ से राजनीति विज्ञान विषय में
पी०एच०डी० की उपाधि
हेतु प्रस्तुत

शोध सारांश

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करुणा
ESTABLISHED 1996

शोध निर्देशक
प्रो० रिपु सूदन सिंह
(संकायाध्यक्ष एंव विभागाध्यक्ष)
राजनीति विज्ञान विभाग
अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर
विश्वविद्यालय, लखनऊ

शोधार्थी
इन्दु
नामांकन संख्याः 910/13
राजनीति विज्ञान विभाग
अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर
विश्वविद्यालय, लखनऊ

अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
लखनऊ–226025
2019

शोध सारांश

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों को जिस एक मात्र कारक ने सर्वाधिक प्रभावित किया, निःसंदेह वह शीत युद्ध ही था। वास्तव में यह शीत युद्ध कोई सैन्य या प्रतिपक्ष युद्ध नहीं था अपितु यह एक वैचारिक संघर्ष था जो इन दो महाशक्तियों (संयुक्त राज्य अमेरिका व सोवियत संघ) के मध्य इस तनावपूर्ण स्थिति को व्यक्त करने के लिए सामने आया जिसे शीत युद्ध का नाम दिया गया। जिसनें एक लंबे समय 1945–1991 के कालखंड को अपनी गिरफ्त में रखा। वस्तुतः यह दो विचारधाराओं के बीच एक प्रकार का वाक् युद्ध, मनोवैज्ञानिक युद्ध, कूटनीतिक युद्ध, या प्रचार युद्ध था। इसका प्रभाव विश्व के अनेक देशों पर दिखाई देता है।

कोहेन और नाई के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में वस्तुतः ऐसे अनेक माध्यम होते हैं जो राज्यों की वेस्टफेलियन व्यवस्था को पीछे छोड़ देते हैं। विभिन्न राज्य अपने हितों को ध्यान में रखते हुए एक दूसरे से जुड़ते हैं यह निम्न रूपों से स्पष्ट होता है–औपचारिक व अनौपचारिक। इस माध्यम के जरिए न केवल राजनीति का आदान–प्रदान होता हैं बल्कि प्राकृतिक स्रोतों का भी दोहन होता हैं। 1990 के बाद विश्व में परिवर्तन की दौड़ शुरू हुई जिसमें पश्चिम के विकसित व पूर्व एशियाई क्षेत्रों के विकासशील देश आर्थिक उन्नति की दिशा में प्रगतिशील प्रयास करने लगे लेकिन इस उन्नति के लिए ऊर्जा एक महत्वपूर्ण कारक माना जाता है जिसके बिना सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक विकास असंभव है।

इस असंभव कारक को प्राप्त करने के लिए विश्व के प्रत्येक राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ऊर्जा स्पर्धा के लिए संघर्ष करने लगें। जिसमें अमेरिका, चीन, जापान, और भारत इत्यादि देश सम्मलित हैं। वहीं ऊर्जा उत्पादक देश अपनी प्राकृतिक संपत्ति का उच्चतम मूल्य प्राप्त करना चाहते हैं क्योंकि इन देशों की आर्थिक स्थिति पूर्ण रूप से खनिज पदार्थों पर निर्भर है। विश्व में उर्जा संपन्न देशों में सऊदी अरब, इराक, ईरान सबसे प्रसिद्ध हैं।

भारत–ईरान सम्बन्ध का विश्लेषण करें तो पायेंगे कि इनका इतिहास सकारात्मक रहा है। पश्चिमी एशियाई क्षेत्रों से विभिन्न सभ्यता एवं संस्कृति भारत में आयीं तथा ईरान की कला और संस्कृति का स्पष्ट उदाहरण बौद्ध धर्म से सम्बन्धित बुद्ध की मूर्तियां हैं। वहीं भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की झलक ईरान में भी देखनें को मिलती हैं।

भारत ने भी अमेरिका द्वारा ईरान–इराक पर तेल संकट (1973) के समय लगाये गये अनुचित प्रतिबन्धों का विरोध किया था। शीत युद्ध के बाद सोवियत संघ के विघटन से अमेरिका की दबावपूर्ण नीति इस क्षेत्र में बढ़ गयी है। इसी का परिणाम 2003 में इराक के खिलाफ युद्ध के रूप में सामने आया। इराक के विरुद्व आर्थिक एवं सैनिक प्रतिबन्ध 1990 से लागू किये गये थे तथा इराक के निःशस्त्रीकरण के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने निःशस्त्रीकरण आयोग की स्थापना की। इसी परिप्रेक्ष्य में अमेरिका अनेक खाड़ी देशों को निःशस्त्रीकरण के नाम पर युद्ध की धमकी भी दे चुका है। इसी का परिणाम था कि सद्दाम हुसैन को हटाकर वहाँ पर पश्चिमी समर्थक सरकार को सत्ता की गद्दी सौंप दी गयी। अतः इराक में पुर्ननिर्माण तथा युद्ध में हुए हर्जाने के तौर पर अमेरिका ने इराक से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से तेल के साथ–साथ बड़ी धनराशि का लाभ उठाया।

ईरान में भी परमाणु कार्यक्रम के नाम पर अमेरिका ने अपना दबाव बढ़ाया तथा परमाणु प्रसार को बन्द करने की बात कही। इसी को लेकर परमाणु अप्रसार के लिए वाटे डाला गया, जिसमें भारत ने न चाहते हुए भी अमेरिका के दबाव में ईरान के खिलाफ वोट डाला। भारत ने ईरान का खुलकर समर्थन तो नहीं किया, परन्तु ऊर्जा जरूरतों की पूर्ति के लिए ईरान के परमाणु कार्यक्रम का पक्षधर रहा। रूस और चीन ने तो ईरान के परमाणु कार्यक्रम का खुलकर समर्थन किया। वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र संघ का मतलब अमेरिका ही लगता है, क्योंकि जो भी इनकी नीतियों के आड़े आता है, वह सीधे अमेरिका का शत्रु बन जाता है और अमेरिका थोडी बात–चीत के बाद सीधे उक्त राष्ट्र को देख लेने (युद्ध) की धमकी देता है। विश्व राजनीति में पश्चिम एशिया 20वीं सदी के प्रारम्भ से ही महत्वपूर्ण बना रहा है क्योंकि विश्व का 60 से 90

प्रतिशत ऊर्जा पश्चिम एशिया से निर्यात की जाती रही है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित अनुसंधान बिना ऊर्जा के नहीं चल सकता है। यही कारण है कि पश्चिम एशिया 21वीं सदी में उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि 20वीं सदी में था।

देखा जाये तो शीत युद्धोंपरान्त भूमण्डलीकरण के दौर में सुरक्षा की अवधारणा में अनेक बातें सम्मिलित हुई हैं। जिसका सम्बन्ध ऊर्जा से है। जहाँ पर पश्चिम एशिया प्राकृतिक तेल एवं गैस से सम्पन्न है, वहीं पर दक्षिण एशिया में जनसंख्या की एक बहुत बड़ी फौज खड़ी है। जब हम इन बातों को संज्ञान में लेते हैं तो भारत और ईरान के सम्बन्धों की चर्चा स्वाभाविक रूप से उठती हैं। भारत और ईरान का सम्बन्ध कोई नई घटना नहीं है वरन् इसकी जड़े इतिहास से जुडी हुई हैं। यही कारण है, कि ईरान और भारत में किसी की भी सरकार रही हो, दोनों देशों के बीच एक आपसी समझ बनी रही है। स्वाभाविक समझदारी से बंधा यह संबंध अनिवार्य होने के साथ ही एक दूसरे का पूरक भी हैं।

भारत–ईरान से खाद्य, उर्वरक तथा तेल एवं गैस का आयातक रहा है। बदले में भारत उसे दैनिक खाद्य्य जरूरतों की सामग्री निर्यात करता हैं। ईरान की आन्तरिक राजनीति में भारत हस्तक्षेप का पक्षधर नहीं है। मानवाधिकार के मुद्दे पर तथा बालश्रम नियम–कानून पर भारत ईरान के साथ है। वैश्विक संगठन तथा विश्व व्यपार संगठन (डब्लू0टी0ओ0) की स्थाई सदस्यता, पर्यावरणीय संगठन संयुक्त राष्ट्र संगठन (यू0एन0ओ0) आदि पर हमनें साथ–साथ आवाज उठाई है। पर्यावरणीय मुद्दों पर ईरान तथा भारत का नजरिया एक है। भारत तथा ईरान दोनों ही पर्यावरण तथा मानवाधिकार के नाम पर पश्चिमी देशों के अनुचित प्रतिबन्ध के विरोधी रहे हैं।

खाद्य सुरक्षा तथा ऊर्जा संकट, प्रबन्धन वर्तमान समय की सबसे बड़ी चुनौती है। ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग के लिए ईरान भारत का खुलकर समर्थन करता है। भारत–ईरान से गैस पाइपलाइन द्वारा गैस की पूर्ति सुनिश्चित करना चाहता है। ईरान ने इस ओर दिलचस्पी दिखाते हुए बढ़–चढ़ कर इसका समर्थन किया तथा गैस देने का वादा भी किया। परन्तु भारत द्वारा ईरान के परमाणु प्रसार के खिलाफ वोट देने के कारण यह परियोजना अभी तक शुरू नहीं हो पायी है। इसके पहले 123 डील के

बाद से भी सम्बन्धों में थोड़ा बिखराव नजर आने लगा है। भारत खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में लगभग आत्मनिर्भर है तथा ईरान को खाद्य सुरक्षा की हर सम्भव मदद करता है। सामरिक दृष्टि से ईरान मुस्लिम बाहुल्य मध्य एशिया में स्थित ऐसा देश है जहां से अन्य देशों तक आसानी से पहुँच बनाई जा सकती है और आर्थिक एंव सामाजिक लाभ उठाया जा सकता है।

उपरोक्त वैचारिक पृष्ठभूमि से शीत युद्धोपरान्त भारत और ईरान के सम्बन्धों में सुरक्षा धारणा का अध्ययन अति महत्वपूर्ण बन जाता है। इसमें रोजगार, खाद्य–सामग्री, ऊर्जा, विकासपूर्ण कार्य से लेकर कला एवं संस्कृति आदि की भी चर्चा करते हैं जिससे ये दोनों देश आपसी सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाकर इस समस्या का समाधान पा सकते हैं। इससे असुरक्षा का भाव कम हो सकता है, और इस सम्बन्ध से किसी तीसरे राष्ट्र को नुकसान नहीं पहुंच रहा है। प्रगाढ़ सम्बन्धों द्वारा भारत–ईरान से रूपये में ही व्यापार कर सकता है, उसे बदले में डॉलर नहीं देना पड़ेगा। इससे दोनो देशों की आर्थिक सुरक्षा भी बनी रहेगी।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मेसोपोटामिया, अफगानिस्तान तथा अन्य खाड़ी देशों से भारत की हड़प्पा संस्कृति मेलुहा (हड़प्पा सभ्यता क्षेत्र) का व्यापारिक सम्बन्ध था जिसमें मेलुहा से लकड़ी, ताँबा एवं कई प्रकार के बीज और सोने का व्यापार होता था। भारत और ईरान का सम्बन्ध सदियों पुराना है। दिल्ली सल्तनत एवं मुगलकालीन शासकों का सामाजिक सांस्कृतिक सम्बन्ध मुख्यतः फारसी सभ्यता से प्रभावित रहा है। इन शासकों ने भारत में इनका प्रचलन प्रारम्भ किया जैसे नवरोज का त्यौहार मनाना, सिजदा (दण्डवत प्रणाम) की प्रथा का प्रचलन आदि यहाँ भी लेकर आये।

भारत की शिल्प कला एवं संस्कृत में ईरान का बहुत प्रभाव रहा है। भारतीय ऋग्वेद और ईरानी ग्रंथ (अवेस्ता) में भी काफी समानता देखने को मिलती है। 1947 तक दोनों देश आपस में एक ही सीमा सांझा कर रहे थे। कई आम सुविधाओं, भाषा, संस्कृति एवं परम्पराओं का आदान–प्रदान कर रहे थे। ईरान के शाह 15 अगस्त 1950

में भारत यात्रा पर आये ओर दोनों देशों के बीच कूटनीतिक सम्बन्धों की शुरूआत शुरूवात हुई।

1959 में पं0 जवाहर लाल नेहरू ने ईरान की यात्रा की। श्रीमती इंदिरा गाँधी ने 1974 में ईरान की यात्रा की थी। 29 अप्रैल 2008 में ईरान के राष्ट्रपति डा0 मोहम्मद अहमदीनेजाद भारत आये। भारत एवं ईरान दोनों देशों के मध्य द्वि–पक्षीय सम्बन्धों को लेकर कई वार्ता एवं बैठकें होती रही हैं। भारत और ईरान का सम्बन्ध सदियों पुराना है, परन्तु इसकी कूटनीतिक शुरूआत 1950 से मानी जाती है, क्योंकि भारत ने अपनी बढ़ती हुई ऊर्जा की मांग को पूरा करने के लिए तेल और गैस आयात हेतु समझौता किया। इसका मुख्य कारण था, कि ईरान के पास दुनिया का 15 प्रतिशत प्राकृतिक गैस संरक्षित है तथा विश्व में दूसरा स्थान है। ईरान का विश्व के अन्य देशों के साथ सम्बन्ध उतने अच्छे नहीं हैं, जितने कि भारत के साथ है। वर्तमान में भारत–ईरान से लगभग 70 प्रतिशत कच्चे तेल एवं लगभग 12 प्रतिशत प्राकृतिक गैस का आयात करता है। गैस का आयात करने के लिए 1999 में भारत ने ईरान के साथ समझौता किया, जबकि पाकिस्तान यह समझौता 1995 में ही कर चुका था। तीनों देशों ने 1999 में आई0पी0आई0 जिसकी दूरी 2700 किमी है, पर समझौता किया है, परन्तु भारत द्वारा ईरान के परमाणु प्रसार पर रोक के लिए वोट देने के कारण वर्तमान में भी यह परियोजना शुरू नहीं हो पायी है। यही कारण है, कि ईरान–भारत में तेल का दूसरा सबसे बढ़ा निर्यातक था, लेकिन अब यह छठे स्थान पर पहुँच गया है।

ईरान एक मुस्लिम देश है तथा यहाँ प्राकृतिक संसाधनो का विशाल भण्डार है। यही विशेषता ईरान को अन्य देशों से अलग पहचान देती है। ईरान में तेल की प्रमुख कम्पनी 1920 में अस्तित्व में आयी तथा 1970 के मध्य तक यह विश्व की चौथी पेट्रोलियम उत्पादक कम्पनी थी 1989 तक यह चौथे नम्बर पर बनी रही। 1979 के ईरान की इस्लामिक क्रान्ति के बाद भी प्राकृतिक संसाधनों में कमी नहीं आयी, जो वर्तमान तक जारी है। ईरान भारत को लगभग 4,25,000 बैरल कच्चा तेल प्रतिदिन निर्यात करता है। आज प्राकृतिक संसाधनों की वजह से ईरान का आर्थिक विकास

बहुत ऊपर उठ है। जिसमे तेल और गैस का मुख्य निर्यात ही ईरान की विकसित अर्थव्यवस्था एवं उसकी आमदनी का माध्यम बन गया है।

ईरान–भारत से चावल, मशीनरी, मेटल सामग्री, स्टील, लोहा, कृतिम प्लास्टिक, खनिज पदार्थ, कृषि सामग्री आयात करता है। ईरान ने तेल और गैस के निर्यात के लिए भारत को तीन रास्ते बताये हैं। पहला आई0पी0आई0 परियोजना, दूसरा समुद्र के रास्ते पाइप लाइन के माध्यम से एवं तीसरा समुद्री जहाज के द्वारा। यह भारत पर निर्भर करता है कि भारत कौन सा रास्ता चुनता है।

भारत–ईरान सम्बन्ध

भारत और ईरान का सम्बन्ध हजारों साल पुराना है, क्योंकि 1200 के लगभग में इण्डो–आर्यन प्रवर्जन ईरान से भारत देखा गया। यहाँ तक की भाषा में भी अदला–बदला होती रही है। संस्कृत और परसियन भाषा के समाचार आज भी पढ़े जाते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में लेखक और छात्र–शोधछात्र दोनों देशों में अध्ययन कर रहें हैं। अगस्त 1947 में जब भारत और पाकिस्तान स्वतंत्र हुए तो इस महाद्वीप में नई स्थिति उत्पन्न हो गयी, जिसका प्रभाव ईरान और कुछ एशियाई देशों पर भी पड़ा, क्योंकि दोनों स्वतंत्र राज्य अत्याधिक विवादस्पद मुद्दों पर उलझ रहे यह समस्या कश्मीर है जो आज भी एक विवाद का विषय बना हुई है। अपने जन्म के बाद पाकिस्तान अपनी विचार धारा और वैधता की खोज में लग गया है, साथ ही इसने भारत की छवि को खराब करने की दोहरी नीति शुरू किया।

ईरान में पत्रकारिता विभाग (प्रेस) और जनता के बीच पाकिस्तान के लिये सहानुभूति थी। हालाकि सरकार का रवैया भौगोलिक, राजनीतिक, सामरिक और सुरक्षा कारणों से निर्धारित किया गया था। अतः स्पष्ट है कि ईरान–पाकिस्तान के मध्य ज्यादा सहानुभूत दिखाई दिया। यह वस्तुतः स्पष्ट है कि ईरान पहला ऐसा देश है जिसने पाकिस्तान की स्थिति को मान्यता दी और 1948 तक कुटनीतिक सम्बन्धों की स्थापना की। पाकिस्तान प्रधानमंत्री लियाकत अली जिन्न ने ईरान का दौरना 1949 में किया तत्पश्चात ईरान के शाह भी 1950 में पाकिस्तान के दौरे पर आये तो दोनों देशों ने आर्थिक, सामरिक क्षेत्रों पर हस्ताक्षर कियें।

इन तथ्यों से यह पता चलता है कि भारत और पाकिस्तान में पाकिस्तान को ज्यादा महत्व दिया गया। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू देश के शीर्ष भारतीय राष्ट्रीय काग्रेंस और राष्ट्रवादी नेता में से हैं जिन्होंने 1946 में रूसी सेना के वापसी के लिये ईरानी मांग का समर्थन किया लेकिन सोवियत संघ को जवाहर लाल नेहरू ने प्रत्यक्ष रूप से आलोचना नहीं की। यह भी माना जाता रहा है कि सोवियत संघ संकट से जूझ रहा था और ऐसा करने के लिये नेहरू की प्रतियिा भारत की आजादी से पहले निहितार्थ थी। ईरान ने कहा कि इन्हें नेहरू के समर्थन का गुमान रहा है उस समय पाकिस्तान का जन्म नहीं हुआ था। इससे यह स्पष्ट होता है कि ईरान की विदेश निति में सोवियत संघ की छाया थी। हालांकि ईरान के लिये सहायक कम्यूनिष्ठ राज्य के लिये एक कोना मात्र रहा है। इस तरह से इस क्षेत्र में त्रिपक्षीय समीकरण देखा गया और भारत के प्रति ईरान का रवैया एक प्रमुख कारक के रूप में अच्छा प्रभाव पाया गया था।

भारत के लिये यह एक मिश्रित टिप्पणी है जिसमें अपनी स्वतंत्रता आन्दोलन में इस पराकाष्ठा का अनुभव किया। ईरान में शीत युद्ध के समय इसका गहरा प्रभाव पाया गया और एक नये राज्य पाकिस्तान का जन्म हुआ इसके साथ ही भारत ने ईरान की पुरानी क्षेत्रीय समीपता (सीमा रेखा) को खो दिया। भारत अपने 390 मील सीमारेखा पाकिस्तान को विरासत में दे दिया जिसकी सीमा रेखा ईरान से लगती थी। तब से सटीकता के साथ कहा जा सकता है कि पाकिस्तान केवल भगौलिक दृष्टि से भारत और ईरान के बीच ही नहीं उभरा बल्कि दोनों देशों के बीच एक कारक के रूप में सामने आया।

फिर भी ईरान की स्थित के बारे में भी आलोचना किये बिना भारत के प्रति अच्छी तरह से रिस्ता निभाया और नेहरू ने इस तथ्य को स्वीकार किया इसका यह रूप दोस्ताना समबन्ध का एक चिन्ह के रूप में भी देखा जा सकता है। ईरानी प्रशासन पहली गैर सरकारी संगठन एशियाई सम्बन्ध सम्मेलन मार्च 1947 में दिल्ली में भाग लिया और इस मंच पर ईरानी प्रतिनिधी ने अपने सम्बन्धों को दोहराया साथ ही भारत की आजादी के लिये शुभ कामना भी दिया। उपर्युक्त स्थित से विदित होता है कि

जिस प्रकार दो व्यक्तियों की आवश्यकताएं समय के साथ–साथ परिवर्तित होती रहती है। इसी आवश्यकता की वजह से दोनों देशों के बीच रिश्तों में उतार–चढ़ाव आता रहता है, इसलिये दोनों देशों के बीच समबन्धों को मजबूती प्रदान करने के लिये एक दूसरे की अवश्यकताओं को समझना होगा। 1947 तक यह देखा गया है कि दोनों देशों ने द्वितीय विश्व युद्ध के जटिल नतीजों को भी साथ में अनुभग किया है।

भारत ने ईरान के खिलाफ वोट दिया जिससे दोनों देशों के सम्बन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। हालांकि यह माना जाता है कि जब भारत ने ईरान के खिलाफ मतदान किया था, यह एक तरह से अमेरिकीय दबाव य झुकाव था, लेकिन 2013 में भारत ने अमेरिकीय दबाव को नजर अन्दाज करते हुए ईरान के साथ ऊर्जा व्यापार जारी रखा जिसे दोनों देशों के बीच सम्बन्धों में स्थिरता शुरू हुई। भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मई 2016 में ईरान की यात्रा किया जिसको भारत ने एक उच्च कोटि की यात्रा करार दिया। इस यात्रा से भारत ने ईरान के साथ चाबाहार बन्दरगाह का विकास, अफगानिस्तान और मध्य एशिया के साथ क्षेत्रीय सड़क और रेल सम्पर्क मार्ग बनाने के लिये 500 मिलियन डॉलर का निवेश करने पर अपनी सहमती व्यक्त की है। इसके अतिरिक्त भारत चाबाहार बंन्दरगाह में लगभग 80 करोड़ अमेरिकी डॉलर का निवेश करने की योजना बनाई है जिसके तहत दोनों देशों के बीच मुक्त व्यापार होगा।

भारत में ईरान की सांस्कृतिक भूमिका भारत के अन्दर शिया मौल्वी,पादरी के चारों आरे धूमती रहती है। भारत में सत्ता की प्रतिष्ठा इस बात से अवगत है और चुपचाप उसे समर्थन देती है। यहाँ तक कि भारत में ईरान के राजदूत एच0 रजा अन्सारी ने एक बार दिल्ली के विश्वविद्यालय में एक भाषण में स्वीकार किया कि इतिहास में कई बार भारत के साथ ईरान के सम्बन्ध अन्य दूसरे मुस्लिम पड़ोसी देशों की अपेक्षा बेहतर रहा है। भारत के सुन्नी मुस्लिम कट्टरवाद पाकिस्तान से उत्पन्न आतंकवाद को अपने राष्ट्रीय सुरक्षा के खतरे को प्रमुख मानता है।

भारत के द्वारा ईरान के खिलाफ वोट दिने से जिससे दोनों देशों के सम्बन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। हालांकि यह माना जाता है कि जब भारत ने ईरान के खिलाफ मतदान

किया था, यह एक तरह से अमेरिकीय दबाव य झुकाव था, लेकिन 2013 में भारत ने अमेरिकीय दबाव को नजर अन्दाज करते हुए ईरान के साथ ऊजा व्यापार जारी रखा जिसे दोनों देशों के बीच सम्बन्धों में स्थिरता शुरू हुई। भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मई 2016 में ईरान की यात्रा किया जिसको भारत ने एक उच्च कोटि की यात्रा करार दिया। इस यात्रा से भारत ने ईरान के साथ चाबाहार बन्दरगाह का विकास, अफगानिस्तान और मध्य एशिया के साथ क्षेत्रीय सड़क और रेल सम्पर्क मार्ग बनाने के लिये 500 मिलियन डॉलर का निवेश करने पर अपनी सहमती व्यक्त की है। इसके अतिरिक्त भारत चाबाहार बंन्दरगाह में लगभग 80 करोड़ अमेरिकी डॉलर का निवेश करने की योजना बनाई है जिसके तहत दोनों देशों के बीच मुक्त व्यापार होगा। दोनों देशों का द्विपक्षीय व्यापार लगभग 13 अरब अमेरिकी डॉलर है जिसमें भारत ईरान से लगभग 12 अरब डॉलर का तेल आयात करता है भारत ने चालू वित्त वर्ष में ईरान से लगभग 25 मिलियन टन कच्चा तेल आयात करने की योजना बनाई थी, जो 2017–18 में आयातित 22.6 मिलियन टन था। भारत में ईरान की सांस्कृतिक भूमिका भारत के अन्दर शिया मौल्बी पादरी के चारों ओर धूमती रहती है। भारत में सत्ता की प्रतिष्ठा इस बात से अवगत है और चुपचाप उसे समर्थन देती है। यहॉ तक कि भारत में ईरान के राजदूत एच0 रजा अन्सारी ने एक बार दिल्ली के विश्वविद्यालय में एक भाषण में स्वीकार किया कि इतिहास में कई बार भारत के साथ ईरान के सम्बन्ध अन्य दूसरे मुस्लिम पड़ोसी देशों की अपेक्षा बेहतर रहा है। भारत के सुन्नी मुस्लिम कट्टरवाद पाकिस्तान से उत्पन्न आतंकवाद को अपने राष्ट्रीय सुरक्षा के खतरे को प्रमुख मानता है। द्विपक्षीय सन्धि दोनों देशों के आर्थिक अैर भू–राजनैतिक हितों पर आधारित है। जाहिर है कि अपने बेहतर द्विपक्षीय सम्बन्धों के माध्यम से ईरान को करीब लाने के लिये भारत कई तरह से भारतीय शिया समुदाय को संतुष्ट करने का प्रयास करेगा। भारत–ईरान सम्बन्धों के विविध आयाम निम्नलिखित है जो किसी देश के साथ अपने सम्बन्धों की एक नई रूपरेखा तैयार करते हैं जैसेः–जनसांख्यिकी, क्षेत्रीय संयोजता, द्विपक्षीय व्यापार, आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना और क्षेत्रीय सुरक्षा मुद्दों पर सहयोग प्रदान करना इत्यादि।

शोध प्रश्न (Research Question)

भारत की बढ़ती ऊर्जा की मांग को ईरान में मौजूद ऊर्जा भण्डार को किस अवसर के रूप में देखा जा सकता है?

- भारत–अमेरिका असैन्य परमाणु समझौते से भारत–ईरान के सम्बन्धों पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
- भारत–ईरान सम्बन्ध पर चीन–पाकिस्तान धुरी की क्या भूमिका है?
- पश्चिम एशिया में गृहयुद्ध और आंतकवाद का भारत–ईरान सम्बन्धों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?
- भारत–ईरान सम्बन्धों के मध्य कटुता बढ़ने के कौन–कौन से कारण है?
- अमेरिका द्वारा ईरान पर प्रतिबन्ध लगाने और भारत द्वारा ईरान के खिलाफ वोट देने के बाद भारत–ईरान के सम्बन्धों पर क्या प्रभाव पड़ा है?
- ईरान के सन्दर्भ में भारत की विदशे नीति का आर्थिक नीति पर क्या प्रभाव पड़ा है?
- भारत की ऊर्जा जरूरतों के सन्दर्भ में ईरान का क्या दृष्टिकोण है?
- क्या आई0पी0आई0 परियोजना को पाकिस्तान सुरक्षा देगा?

परिकल्पना (Hypothesis)

- भारत–अमेरिका असैन्य परमाणु समझौते का भारत–ईरान के बीच ऊर्जा सुरक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
- भारत, पाकिस्तान और ईरान के नेताओं में ऊर्जा सुरक्षा को लेकर दृढ़ इच्छा शक्ति का अभाव है।
- अमेरिका स्वयं अपने सम्बन्धों को ईरान के साथ बेहतर करने में लगा है और वह नहीं चाहता है कि भारत का ईरान के साथ सीधे सम्बन्ध स्थापित हो।

शोध पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध में ऐतिहासिक, विशलेषणात्मक, तुलनात्मक एवं आनुभाविक पद्धति व सौउद्देश्यात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया हैं। इसके साथ प्राथमिक (Primary) एवं द्वितीयक (Secondry) स्रोतों से जानकारी एकत्रित करने का प्रयत्न किया गया हैं। इसके लिए प्रमुख राजनयिकों एवं विषय–विशेषज्ञों के साथ साक्षात्कार किया गया हैं। साथ ही साथ सरकारी दस्तावेजों व विभिन्न समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं का विश्लेषण किया गया हैं। इस प्रकार हम उपरोक्त पद्धतियों का सहारा लेते हुए शीत युद्धोत्तर भारत–ईरान सम्बन्धः ऊर्जा सुरक्षा के विशेष संदर्भ में निष्पक्ष एवं वैज्ञानिक विश्लेषण अपने शोध के माध्यम से करने का प्रयास किया गया हैं। अध्यायों का संक्षिप्त परिचय

प्रथम अध्याय

इस अध्याय के अंतर्गत सम्पूर्ण शोध कार्यो का विश्लेशण किया गया है तथा विभिन्न आयामों को भी परिभाषित किया गया है जैसे–अध्ययन की प्रासंगिकता, साहित्य की समीक्षा, शोध प्रश्न, शोध के उद्देश्य, शोध परिकल्पना तथा शोध की विधि का वर्णन किया गया है।

द्वितीय अध्याय

इस अध्याय के अंतर्गत भारत–ईरान सम्बन्धों का उल्लेख किया गया है साथ ही दोनों देशों के परम्परागत रूप से प्राचीन काल से ही एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और इसी दौर से लेकर आज तक दोनों देशो के बीच न केवल संस्कृतक जुड़ाव रहा है बल्कि आर्थिक राजनीतिक सम्बन्ध भी रहे हैं। हालांकि यह व्यापार केवल सिंधु घाटी तक ही सीमित था क्योंकि अन्य स्थानों से या राज्यों से प्राचीन ईरान के साथ व्यापार का कोई प्रमाण नहीं मिला है जो भी प्रमाण मिले हैं, वह केवल मेलुहा से मिलते हैं, जहां से प्राचीन पारस (ईरान) के बीच व्यापार होता था। मुगल काल एवं मौर्य काल में भारत–ईरान के संबंधों को स्वर्णकाल भी कह सकते हैं क्योंकि मुगल काल के शासकों का संबंध ईरान से था, वे ईरान की भाषा, संस्कृति, स्थापत्य कला, चित्रकारी, आदि से बहुत ही प्रभावित थे तथा ईरान के स्थापत्य कला के प्रमाण भारत में मिलते हैं।

तृतीय अध्याय

इस अध्याय में भारत और ईरान के ऊर्जा संबंधों को परिभाषित किया गया है साथ ही भारत में ऊर्जा की खपत व उपलब्धता को विश्लेषित किया गया है, भारत–ईरान के राजनीतिक संबंधों व आने वाले दिनों में क्या रणनीतियां रहेंगी के अलावा यह भी परिभाषित करने का प्रयास किया गया है कि क्या भविष्य में ईरान–भारत की ऊर्जा आवश्यकता को पूरी कर पाएगा। भारत की क्या नीति रहेगी, विशेषकर ऊर्जा संबंध में, भारत–ईरान के संबंधों में क्या–क्या समस्याएं व बाधाएं उत्पन्न हो रही हैं इसका भी इस अध्याय में उल्लेख किया गया है।

चतुर्थ अध्याय

इस अध्याय में दोनों देशों के बीच राजनीतिक, सामरिक, और आर्थिक इत्यादि विभिन्न पहलुओं को उल्लेखित किया गया है साथ ही दोनों देशों में हो रहे राजनितिक बदलावों को भी सम्मिलित किया गया है। भारत ईरान संबंधों के विविध आयाम में निरंतर परिवर्तन के स्वरूप भी रहे है जिससे दोनों देशों के बीच रिश्तों में उतार–चढ़वा भी आते रहते है जिसकी वजह से भारत को ऊर्जा के क्षेत्र में भारी नुकसान भी सहना पड़ता है लेकिन दोनों देश विश्व जगत में एक साथ काम कर रहे है।

पंचम अध्याय

इस अध्याय में भारत अमेरिका सम्बन्धों का विश्लेशण किया गया तथा शीत युद्ध के बदलते समीकरण व विश्व के विभिन्न देश आपसी प्रतिस्पर्धा के दौर से गुजर रहे हैं। इस बदलते परिवेश में ईरान और अमेरिका का आपस में कैसा संबधं है। भारत का अमेरिका और ईरान के संबंधों में क्या बदलाव या परिवर्तन हुआ है साथ ही भारत की अमेरिका से दोस्ती पर ईरान की अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ेगा। इस अध्याय में यह भी परिभाषित किया गया है कि ईरान पर अमरीकी प्रतिबंध से भारत की ऊर्जा सुरक्षा एवं अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ेगा। भारत ईरान के संबंधों से अमेरिका को अपने व्यापारिक हित पर खतरा मंडराता हुआ नजर आ रहा है, इसलिए वह दक्षिण एशिया में अपने आपको मजबूत करने के लिए खाड़ी देशों को सुरक्षित अर्थव्यवस्था की दौड़ से बाहर करने में लगा हुआ हैं।

षष्ठम् अध्याय

इस अध्याय के अन्तर्गत भारत और ईरान दोनों देश आपसी सामंजस्य को बढ़ाते हुए विश्व के अन्य बिभिन्न क्षेत्रों में अपना विस्तार कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त दोनों देश दक्षिण और पश्चिम एशियाई क्षेत्रों में अपना आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक समरसता के द्वारा प्रभाव स्थापित करने की कोशिश भी कर रहे हैं। भारत दक्षिण एशिया में अपने प्रभाव को स्थापित करने के लिए पड़ोसी देशों को आर्थिक सहायता करने व उनकी विभिन्न समस्याओं को सुलझाने की कोशिश कर रहा है।

सप्तम् अध्याय

इस अध्याय में भारत–ईरान संबंधों के बदलते स्वरूप व वैश्विक मुद्दों पर सहयोग की संभावनाएं देखी जा रही हैं। ईरान एशिया में भू–स्थानिक संबंधों को बदलने में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। भारत–ईरान के बीच अक्सर अनदेखे द्विपक्षीय संबंध न केवल आकर्षित करते हैं, बल्कि एक ऐसा प्लेटफार्म प्रदान करते हैं, जिसके द्वारा पूरे एशिया में स्थानांतरित किये गये भू–स्थानिक संबंधों को देखा और समझा जा सकता है। दोनों देश विश्व में हो रहे परिवर्तनों में भी साथ है जैसे जलवायु परिवर्तन, संस्थागत परिवर्तन इत्यादि। एशिया में हो रहे परिवर्तनों के चलते भारत और चीन एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं इस प्रतिस्पर्धा में ईरान–भारत को पूर्ण सहयोग करता हुआ नजर आ रहा है।

अष्टम् अध्याय

इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषणों से स्पष्ट होता है कि भारत ऊर्जा सुरक्षा को ध्यान में रखे हुए अपने तेल भू–राजनीति के क्षेत्र को विस्तृत कर रहा हैं। जिसकी वजह से ईरान–भारत की ऊर्जा जारुरतों को पूरा करने सक्षम हैं लेकिन बाह्य दबाव के चलतें ऊर्जा प्राप्त करने में असक्षम हो जाता हैं।

शीतयुद्व के बाद की राजनीति समूचे विश्व में एक नितान्त नई प्रक्रिया को जन्म देता है जिसे वैश्वीकरण का नाम दिया जाता है। इस वैश्वीकरण ने न सिर्फ

पूँजीवादी और समाजवादी विमर्शों को प्रभावित किया है बल्कि तीसरी दुनिया में चल रहे समाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं धार्मिक ठहराव को भी गतिशील कर दिया है। इस समूचे वैश्वीकरण की प्रक्रिया में कुछ केन्द्र में ज्ञान, विज्ञान, तकनीकि ही बनी रही। इस प्रक्रिया में उर्जा की जरूरत अचानक ही बढ़ गयी। भारत ईरान सम्बन्ध में अन्य सम्बन्धों के अलावा ऊर्जा एक अत्यन्त महत्वपूर्ण घटक के रूप में प्रासंगिक बना रहा। 1979 में ईरान में हुई इस्लामिक क्रांति के बाद अलग थलग पड़े ईरान की स्थिति एक बहिस्कृत देश की तरह हो गयी थी जिसे मित्र की नहीं बल्कि मित्रों की जरूरत थी। भारत और ईरान सम्बन्ध उक्त विमर्श का स्वाभाविक परिणाम रहा है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषणों से स्पष्ट होता है कि 1990 के बाद ऐसा कोई देश नहीं है जिसने प्राकृतिक संसाधन के महत्व को न समझा हो और यह महत्व कई राष्ट्रो के नीतियों में अपना केंद्रीय स्थान हासिल किया है। विकास एक ऐसी प्राक्रिया है जिसके अनुभव से दुनिया के कई देश अछूते हैं, और अभी भी संघर्ष की अवस्था में हैं। विश्व के अनेक राष्ट्र अपने नागरिकों को बुनियादी सुविधाएं मुहैया कराने और उनका जीवन स्तर सुधारने के लिए निरतंर असमर्थ है। ऐसे मोड़ पर विकास प्रक्रिया में सहायता देने के लिए ऊर्जा एक महत्वपूर्ण कारक बन गया है। पृथ्वी पर ऐसे कई संसाधन उपलब्ध हैं जिनका इस्तेमाल किया जा सकता है, उनमें से तले और गैस सबसे महत्वपूर्ण हैं।

आधुनिक युग में विभिन्न (खास तौर पर तेल व गैस उत्पादक) देशों के बीच जब कोई सौदा या समझौता होता है तो तेल व गैस का स्थान सर्वोपरि होता है। चाहे वह विकसित और विकासशील देश ही क्यों न हो सभी को इसकी जरूरत होती है। जिसकी वजह से कुटनीतिक षड़यत्र रचे जाते हैं और ये नीतियां विश्व पटल पर अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। ऊर्जा उन देशों को जोड़ने में लगी है जिन्हे भौगोलिक दृष्टि से बिल्कुल उल्टा या नगण्य कहा जाता रहा है। परन्तु उनके विशाल संसधानों के कारण तेल और गैस संपन्न क्षेत्रों की कीमतों में इजाफा हुआ है। इस

प्रकार, ऊर्जा और राजनीतिक सम्बन्ध एक दूसरे के निकट हैं और इस राजनीतिक सम्बन्ध में भू–राजनीतिक खेल के साथ–साथ गैर राजनीतिक संगठन भी अपनी भूमिका निभा रहे है। जैसा की इस शोध कार्य में भारत–ईरान के द्विपक्षीय संबंधों व भारत की ऊर्जा जरूरतों को ईरान पूरा करने में सक्षम है, साथ ही धार्मिक कट्टरपंथी, आतकंवाद, भारत–चीन प्रतिस्पर्धा व भारत–अमेरिका सम्बन्ध से ईरान और भारत के बीच ऊर्जा सुरक्षा पर प्रभाव इत्यादि बिन्दुओं को उल्लेखित किया गया है।

भूमंडलीकरण के दौर में आर्थिक विकास के लिए दो राज्यों के बीच नजदीकी व प्रतियोगिता होना महत्वपूर्ण उन्नती का कारक माना जाता है लेकिन इसका प्रभाव आमतौर पर कुछ कमजोर अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ता है। इस दौर में पूरी तरह से एक स्वतंत्र अर्थव्यस्था विकसित करना असंभव है। सोवियत संघ के विघटन के बाद वैश्विक स्तर पर सहयोग का रास्ता शुरु हो गया था विश्व के अविकसित देश आर्थिक तंगी से गुजर रहे थे जिसमें भारत और चीन भी सम्मिलत है, दोनों देशों की आर्थिक स्थिति के समान होने के कारण पुरानी समस्याओं से उबरने के लिए प्रयासरत थे।

भारत 1990 के दशक में अपनी नाजुक अर्थव्यस्था के चलते दिवालिया की स्थिति में पहुंचा गया था जिसके चलते भारत ने 1991 में नयी अर्थव्यस्था वाली नीति को अपनाया इसका परिणाम यह हुआ कि समाजवादी विचारधारा को छोड़कर पूँजीवादी रास्ते पर चल पड़े। जिसमें निजीकरण और उदारीकरण अहम थे, भारत ने अपनी आर्थिक नीति को एक नए दौर में पहुँचा दिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि विश्व के अनेक विकसित देशों से ज्यादा से ज्यादा निवेश भारत में होने लगा। भारत की बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था में ऊर्जा जरूरतों के लिए तेल और गैस को सुरक्षित करने एंव विश्व के ऊर्जा उत्पादक देशों के साथ राजनीतिक संबंधों को प्रगाढ़ करने की कोशिश में लग गया क्योंकि भारत के लिए ऊर्जा सुरक्षा महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत विश्व के सर्वोत्तम संस्थानों जैसे–डब्लू0टी0ओ0 और ओ0ई0सी0डी में अपनी जगह हासिल की।

भारत की आर्थिक व्यवस्था में सुधार करने के लिए विदेश नीति को तेल की कूटनीति में तब्दील कर दिया गया। यह परिवर्तन वर्ष 1991 के बाद किया गया तथा

इन 4 से 5 वर्षों में भारत, विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में ऊर्जा की संभावनाएं तलाशने लगा। वैश्वीकरण के दौर में भारत की विदेश नीति में ऊर्जा सुरक्षा सबसे प्रमुख है। ऊर्जा सुरक्षा के मामले में भारत उच्च स्तरीय कूटनीति का इस्तेमाल कर रहा है, 1960–1982 तक भारत तकनीकी यातायात के मामले में पूरी तरीके से रूस पर निर्भर था। भारत ऊर्जा तकनीकी के मामले में बहुत पिछड़ा था इसके चलते पश्चिमी तेल रिफाइनरी कंम्पनियॉ रूस से आयात तेल का शोधन करने से माना कर देती थी तब भारत सरकार ने रूस और रोमानिया सरकार के सहयोग से अपने रिफाइनरी कंपनी की स्थापना करने का निर्णय लिया।

भारत ऊर्जा सुरक्षा की जरूरत को ध्यान में रखते हुये अपनी विदेश नीति में भू–राजनीति को अधिक महत्व दिया है। क्योंकि 1991 में सोवियत संघ का विघटन होने के पश्चात भारत के ऊर्जा आयातक देश हमेशा बदलते रहे हैं। साथ ही भारत वैश्विक बाजार में नये तेल उत्पादक देशों की तलाश के साथ–साथ इस क्षेत्र में भारतीय तेल कंपनियों ने निवेश को बढ़ावा दिया। आधुनिक युग में भारत ऊर्जा सुरक्षा को लेकर बहुत ही चिन्तित है। भारत का ऊर्जा स्रोत्र मुख्य रूप में कोयला, तेल, गैस, और सौर ऊर्जा आदि हैं जो ऊर्जा जरूरतों के मुताबिक बहुत ही कम है। भारत में लगभग एक करोड़ से ज्यादा लोग अभी भी बिजली की आपूर्ति से वंचित है। लगभग 10 प्रतिशत गॉव के लागे अभी भी परम्परागत ऊर्जा पर निर्भर है। इसके चलते आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न हो रही है।

भौगोलिक दृष्टि से भारत विश्व का सातवां बड़ा देश है और इसकी जनसॅख्या एक अरब 20 करोड़ है जो चीन के बाद विश्व में दूसरा सबसे बड़ा देश है। इसकी सकल घरेलू उत्पाद लगभग 7 से 8 प्रतिशत है जबकि 2008 में आर्थिक संकट भी आया था लेकिन देश की अर्थव्यस्था को ज्यादा नुकसान नहीं सहना पड़ा। भारत के पास परंपरागत और गैर परंपरागत ऊर्जा उपलब्ध है, लेकिन आवश्कता के अनुसार उपलब्ध ऊर्जा को पूरा नही किया जा सकता है। इसलिए भारत 80 प्रतिशत ऊर्जा का आयत विश्व के अनेक देशों से करता है। भारत ने 1990 में 40 प्रतिशत तेल का

आयत किया था जो की वर्ष 2011 में बढ़कर 70 हो गया और 2017–18 में 80 प्रतिशत है।

उपर्युक्त आकड़ों से पता चलता है की भारत को ऊर्जा आवश्यकता दिन प्रति–दिन बढ़ रही है यदि इसी रफ तार से बढ़ती रहेगी तो आने वाले दिनों में उर्जा का आयत 90–95 प्रतिशत हो जायेगा। इस आवश्कता को मद्दे नजर रखते हुये भारत को सस्ती और अच्छी ऊर्जा स्त्रोतों को ढूँढना होगा। इसके चलते भारतीय सरकार ने विभिन्न देशों के साथ सन्धि किये हैं साथ ही भारतीय तेल कंपनियों को भी ऊर्जा उत्पादक देशों (सऊदी अरब, अफ्रीका, इराक, ईरान, यू0ए0ई0) में निवेश करने के लिये प्रेरित किया है जैसे–ओ0एन0जी0सी0, गेल इत्यादि।

भारत अधिकतम ऊर्जा की पूर्ति खाड़ी के देशों से पूरा करता है क्योंकि इस क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में तेल व प्राक्रतिक गैस का भण्डार है। जिसमें से सऊदी अरब, इराक और ईरान प्रमुख हैं। ईरान–भारत को सबसे अधिक तेल निर्यात करता है। ईरान विश्व में चौथे तेल भंडारण में अपना स्थान प्राप्त किया है और वहीं गैस के मामले में दूसरे स्थान पर है। उपलब्ध ऊर्जा को मद्दे नजर रखते हुये भारत–ईरान से प्रगाढ़ संबध बनाये हुये हैं दूसरी तरफ ईरान को भी एक सबसे बड़ा बाजार मिला हुआ है। जिससे दोनों देश एक दूसरे से जुड़े हुये है। दोनों देशों के बीच ऊर्जा सम्बन्धों में उतार–चढ़ाव का इतिहास रहा है लेकिन दोनों देशों ने कभी भी व्यापारिक रिश्ता ख़राब नहीं किये। इसके साथ ही दोनों देशों ने प्राकृतिक गैस खोज और उत्पादन में हमेशा एक दूसरे का साथ दिया है।

भारतीय तेल कंपनी ईरान के फरजाद–बी गैस क्षेत्र कि खोज करने में शामिल था, लेकिन 2012 में पश्चिमी प्रतिबंधों के कारण यह कार्य रुक गया। लेकिन फिर 2016 के अंत में ईरान ने भारतीय निवेश के लिए विशेष रूप से गैस क्षेत्र शामिल करने पर सहमति व्यक्त किया परन्तु यह मौका रूस को दे दिया जिसकी वजह से भारत और ईरान के बीच एक दरार पैदा कर दिया। ईरान ने पहली बार तेल निर्यात में एक तिहाई की कटौती करके जवाबी हमला किया। हालांकि बार–बार असहमति और संबंधों के टूट जाने के बाद जुड़ना काफी समस्या हो जाती है जिसके वजह से

अनुबंध नहीं हुआ। मई 2017 में, ईरान ने रूस को फर्जाद–बी गैस क्षेत्र विकसित करने की अनुमति दे दी। ईरानी अधिकारियों ने भारत को कहा कि इस क्षेत्र में एक साथ कई विकल्प है जो आप को बाद में उपलब्ध कराई जाएंगी और इसके बाद दोनों देशों में बातचीत जारी रही। इसके पश्चात् रूस की तानाशाही को कम करने के लिए ईरानी तेल मंत्री बिजन नामदार जंगानेह ने वियना में आर्गस से बात करते हुए गजप्रॉम के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किया। इसी बीच भारतीय फर्मों ने कहा कि वे भी तेल और गैस की संपत्ति खरीदने के लिए कहीं और देख रहे हैं। कुछ समय पश्चात कच्चे तेल की कीमत में बदलाव के कारण दोनों को फिर से संगठित होना पड़ा। ऊर्जा स्रोतों में विविधता लाने के भारत के प्रयासों के बावजूद भारत–ईरान और अन्य प्रमुख ऊर्जा आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भर है। तेल खरीदने के अलावा दिल्ली अपनी ऊर्जा सुरक्षा को बचाना चाहती है, और इसके लिये यह आपूर्तिकर्ताओं के साथ दीर्घकालिक निवेश कर रही है और राजनयिक सम्बन्ध भी बना रही है।

इसके साथ ही ऊर्जा के द्वारा भारत के विभिन्न आयामों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। वैश्विक युग में ऊर्जा उपलब्धता होने की वजह से भारतीय अर्थव्यवस्था में उन्नति हुई है, वर्ष 2001–02 में जीडीपी 5.81% थी और वहीं 2013–14 में घट कर 4.7% हो गयी तथा 2018 में जीडीपी 7.2% है इस तथ्य से पता चलता है की ऊर्जा के अर्न्तगत आर्थिक उन्नति बहुत तेजी के साथ होती है। कुछ राजनीतिक चिन्तक यह भी कहते हैं कि जैसे–जैसे आर्थिक उन्नति होगी वैसे–वैसे ऊर्जा की आवश्यकता भी जरूरत पड़ेगी। भारत–ईरान दोनों देश विश्व पटल पर एक नए रस्ते पर चल पड़े और दोनों देश एक दूसरे के महत्व को समझने लग। भारतीय अर्थव्यवस्था की बढ़ती विकास दर ने भारत–ईरान संबंधों में एक नया अध्याय जोड़ दिया है। इसका प्रभाव न केवल आर्थिक जगत पर पड़ा है बल्कि सास्कृतिक राजनीतिक व सामरिक क्षेत्रों पर भी पड़ा है।

अमेरिका व चीन यह कभी भी नहीं चाहते हैं कि भारत–ईरान से उर्जा आयात करें। क्योंकि अमेरिका और ब्रिटिश शासन दुनिया में सबसे सस्ता और सबसे आसानी से उपलब्ध तेल भंडारों पर नियंत्रण स्थापित करने की कोशिश शुरू से ही कर रहे

थे। अमेरिका और ब्रिटिश तेल कंपनियां इराक के खिलाफ वर्ष 2003 में युद्ध किया जिसमें बीपी, एक्शन मोबिल, शेवरान टेक्साको इत्यादि कंपनियां सम्मलित थी। जिसका मुख्य उद्देश्य था कि इस क्षेत्र में उपलब्ध तेल सुविधाओं को सुरक्षित करना। क्योंकि अमेरिका में तेल की खपत दुनिया के खपत का लगभग 26 प्रतिशत है। यह खपत आने वाले दिनों में भी बढ़ेगा। अमेरिका में ऊर्जा भंडार दुनिया की तुलना में लगभग 2.8 प्रतिशत ही उपलब्ध है। जिसकी वजह से इराक, सऊदी अरब, व ईरान जैसे महत्वपूर्ण ऊर्जा क्षेत्रों पर अपनी निगाहें लगाये बैठा हुआ है। जिसे अमेरिका अधिकतम दोहन करना चाहता है और समुद्री मार्गों को सुरक्षित करने का प्रयास भी कर रहा है। खाड़ी देशों को अपने खेमे में लेने के लिए दबाव डालता है क्योंकि 1973 में तले की कीमतों में वृद्धि के बाद अमेरिकी अधिकारियों ने इस क्षेत्र में सैन्य शक्ति के द्वारा आर्थिक संपदा को भी हासिल करना चाहा था। यह नियंत्रण की प्रवृत्ति समय समय पर बदलती रहती है प्रायः अमेरिकी अधिकारी सैन्य शक्ति के द्वारा अरब खाड़ी देशों में अपना आधिपत्य स्थापित करने में सफल रहे हैं। एवं अरब खाड़ी के देश इस षड्यंत्र का शिकार बने हुए हैं। वैश्विक राजनीति में तेल की राजनीति पूर्ण रूप से हावी हो गई है। वर्तमान समय में करीब दुनिया में समुद्र जनित कच्चे तेल का 35 फीसदी पश्चिम एशिया के देशों से निकाला जाता है तथा होरमुज के जलडमरूमध्य और ईरान के बीच जलडमरूमध्य के उत्तर–पूर्ब किनारे से और यूनाइटेड अरब अमिरत के ओमानी इन्क्लेव के मौसदम पर जलडमरूमध्य दक्षिण पश्चिम किनारे के माध्यम से होकर वैश्विक बाजार तक लाया जाता है। अमेरिका खाड़ी देशों से लगभग 17 प्रतिशत तेल का आयात करता है यद्यपि आज भी अमेरिका कच्चे तले का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। इस आयात को अमेरिका बरकार रखना चाहता है। खाड़ी देशों के बीच आपसी कूटनीति व् गृहयुद्ध के चलते तेल के आयात पर न केवल अमेरिकी देशों पर पड़ता है बल्कि इसका प्रभाव विश्व में भी पड़ता है। जिसके चलते विश्व में एक देश दूसरे देश से आपसी समझौते व ऊर्जा कूटनीति में एक दूसरे का सहारा ले रहे हैं।

यदि भारत और अमेरिका के संबंधो का उल्लेख करते हैं तो दोनों देशों के बीच राजनीतिक संबंध अच्छे थे लेकिन यदा–कदा दोनों देशों के बीच उतार–चढ़ाव का भी दौर रहा है, भारत के आर्थिक, राजनीतिक व ऊर्जा संबंधों पर भी गहरा प्रभाव

पड़ता है। यही वजह हैं कि भारत का खाड़ी देशों के साथ व अन्य ऊर्जा उत्पादक देशों से आर्थिक और राजनीतिक संबंधों में भी खटास आ जाती हैं क्योंकि अमेरिका अपने बदलते समीकरण के अनुसार विश्व जगत में सैन्य प्रतिबंध व पर्यावरण मुद्दों के द्वारा विश्व में कानूनी दांवपेच खेलता रहता है। जिसके द्वारा विश्व राजनीति में एक हलचल सी स्थिति बन जाती है। उदाहरण के तौर पर अमेरिका ने ईरान पर परमाणु प्रतिबंध लगाया तो कच्चे तले की कीमतों में इजाफा हो गया और भारत इस रणनीति का शिकार बन गया। वर्तमान समय में अमेरिकी प्रशासन ने ईरान पर प्रतिबंध लगा दिया। जिसमें कहा गया कि ईरान परमाणु समझौता पी0 फाइव प्लश वन के नियमों का उल्लंघन कर रहा है जिसकी वजह से ईरान के तेल उत्पादन में कमी आयी है साथ ही ईरानी अर्थव्यवस्था पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। भारत में सऊदी अरब के बाद ईरान दूसरा सबसे बड़ा तले आपूर्तिकर्ता देश रहा हैं।

यदि भारत–ईरान सम्बन्धों का विश्लेषण दक्षिण एशिया व पश्चिम एशिया से करते हैं तो दोनों देश क्षेत्रीय समीकरण को मजबूत करने की कोशिश कर रहे हैं चाहे वह आर्थिक हो या राजनीतिक। पश्चिम एशिया में भारत अपने सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक संबंधों को और अधिक मधुर करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहा हैं। भारत जी0सी0सी0 देशों के साथ अपनी ऊर्जा सुरक्षा पर अपना ध्यान केंद्रित कर रहा है इसके अलावा, व्यापार, निवेश, सुरक्षा व भारतीय कामगार और उनसे मिलने वाली रकम सबसे महत्वपूर्ण है जिसके कारण भारत को एक सम्बल प्राप्त हो रहा है। वैश्विक दौर में भारत का मुख्य उद्देश तेल व गैस की आपूर्ति करना हैं ताकि उच्च आर्थिक उन्नति की जा सके। वहीं दूसरी तरफ ईरान दक्षिण एशियाई देशों के साथ अपने आर्थिक, राजनीतिक, संबंधों को भी मजबूत करने की कोशिश कर रहा है। जिससे भारत को दक्षिण एशिया में सामरिक, आर्थिक व राजनीतिक सफलता मिलने में आसानी होगी जैसे ईरान ने भारत–अफगानिस्तान के बीच कई समझौते किये। जिससे आर्थिक उन्नति ही नही बल्कि ऊर्जा के क्षेत्रों में भी उन्नति होगी।

भारत हमेशा से ही विश्व पटल पर गुटनिरपेक्षता का रास्ता अपनाया है जिससे किसी भी राष्ट्र को कोई नुकसान पहुंचाये बिना अपनी उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर

रहा है। इसका उद्देश्य संघर्ष की जगह शांति के क्षेत्र को विस्तारित करना। सभी गुट निरपक्षे राज्य अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका में स्थित है इस क्षेत्र के सभी देश पहले शोषित और उत्पीड़न का शिकार हो चुके थे और भारत भी इसका अभिन्न अंग रहा है भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को समझने के साथ–साथ अपनी आर्थिक, राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्ति करने के लिए विश्व जगत में अपनी जगह बनाने की कोशिश कर रहा है।

सुझाव

- भारत को अपनी ऊर्जा आवश्यकता पूरा करने के लिए ईरान में भारतीय कंपनियों का निवेश और बढ़ाना चाहिए जिससे विपरीत परिस्थितियों में भारत को फायदा हो सकेगा।
- आई0पी0आई0 पाइपलाइन के लिए भारत को पाकिस्तान के रास्ते से न होकर, ईरान–अफगानिस्तान–भारत के रास्ते को अपनाना चाहिए।
- भारत–ईरान के सम्बन्धों को मजबूत करने के लिए रूस का भी सहारा लेना चाहिए जिससे भारत मध्य एशिया में भी अपनी पैठ बना सकता है और एक नये विकल्प के रूप में भारत व मध्य एशिया दोनों को फयदा होगा।
- भारत को अपनी ऊर्जा जरुरतों को पूरा करने के लिए सौर और पवन ऊर्जा के अलवा समुद्री तरगों के माध्यम से भी बिजली के उत्पादन करने पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि आने वाले दिनों में जलवायु परिवर्तन को भी सुरक्षित रखना होगा।
- भारत–ईरान सम्बन्धों को मजबूत करने के लिए ईरान में आर्थिक निवेश को बढ़ावा देना चाहिए।
- भारत को इजरायल के साथ को अपने सम्बन्धों अधिक मजबूत करने चाहिए इससे पश्चिम एशियाई देशों व क्षेत्रीय विकास के लिए तकनीकि मदद मिल सकेगी।